प्रस्ताव क्रमांक-७ से परिशिष्ट
वि.प. २४, २५ -१-१९९०
हिंदी विभाग, पुणे विद्यापीठ

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) पाठ्यक्रम - ८५ पैटर्न

इस पाठ्यक्रम का अध्यापन जून १९९० से प्रारंभ होकर अप्रैल १९९३ तक की परीक्षा के लिए होगा ।

पूरे पाठ्यक्रम का विभाजन दो वर्षों के लिए होगा । विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष में प्रश्नपत्र १ से प्रश्नपत्र ४ तक का और द्वितीय वर्ष में प्रश्नपत्र ५ से प्रश्नपत्र ८ तक का अध्ययन करना होगा ।

" प्रयोजनमूलक हिंदी " विषय लेने वाले छात्रों के लिए सामान्य स्तर और विशेष स्तर दोनों स्तरों के प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना होगा । "प्रयोजनमूलक हिंदी का गौण विषय के रूप में अध्ययन करनेवाले (यानी अन्य विशेष विषय के ३ प्रश्नपत्र और हिंदी का १ प्रश्नपत्र लेनेवाले) विद्यार्थियों को प्रथमवर्ष में " प्रश्नपत्र १ - सामान्यस्तर " का तथा द्वितीय वर्ष में " प्रश्नपत्र सामान्यस्तर " का अध्ययन करना होगा ।

प्रश्नपत्र २, ३, ४ और प्रश्नपत्र ६, ७, ८ विशेष स्तर के रहेंगे । इनमें से प्रश्नपत्र ४ और प्रश्नपत्र ८ के अंतर्गत ३ । ३ विकल्प रखे गए हैं । विद्यार्थी को इनमें से प्रतिवर्ष किसी एक ही वैकल्पिक प्रश्नपत्र का चयन करना होगा ।

किसी विशेष विभाग में विषय में विशेषज्ञ प्राप्त करने की दृष्टि से प्रश्नपत्र ४ और प्रश्नपत्र ८ के अंतर्गत प्रतिवर्ष के लिए ३ । ३ विकल्प रखे गए हैं । विद्यार्थी उसके अध्ययन केंद्र में पढ़ाए जानेवाले विकल्पों में से प्रतिवर्ष अपनी-अपनी रुचि के अनुसार किसी एक विकल्प का अध्ययन कर सकता है ।

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) पाठ्यक्रम के उद्देश्य

१. हिंदी के छात्रों को सरकारी, अर्धसरकारी अथवा अन्य नौकरियों में नियुक्ति पाने के लिए तैयार करना ।

२. हिंदी माध्यम से अनुवादक तैयार करना ।

..२

३. अंग्रेजों तथा भारतीय, विशेषतः मराठी और हिंदी के बीच संपर्क सेतु तैयार करना।

४. ऐसे योग्य व्यक्ति तैयार करना, जो दुभाषिए का कार्य कर सकें।

५. हिंदी भाषा की व्यावहारिक उपयोगिता से परिचित कराना।

६. राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी भाषा के समन्वयात्मक स्वरूप से परिचित कराना।

७. वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी भाषा के अनुप्रयोग से परिचित कराना।

८. तथा उसमें दक्षता प्राप्त कराना।

८. भाषा की विविध शैलियों की जानकारी देना।

९. पत्रकारिता के माध्यम से जनसामान्य को आधुनिक ज्ञान की जानकारी देना।

१०. हिंदी की विभिन्न बोलियों तथा बोली क्षेत्रों का ज्ञान कराना।

११. भाषा अधिगम की कठिनाइयों एवं संप्रेषण अंतर को समझाने का प्रयास करना।

१२. हिंदी भाषा के अन्य व्यावहारिक पक्षों एवं दैनिक व्यवहार की भाषाई आवश्यकता की संपूर्ति का प्रयास कराना।

१३. हिंदी भाषा में व्यवसायोन्मुखी व्यक्तियों के भाषायी कौशलों का विकास करना।

१४. अन्य व्यवसाय क्षेत्रों में हिंदी भाषा की उपयोगिता बताना।

एम. ए. हिंदी

प्रयोजनमूलक हिंदी : सत्र विरहित - ८५ पैटर्न पाठ्यक्रम

(M.A.Functional Hindi-Non Semester '85 Pattern)

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

एम. ए. प्रथमवर्ष

प्रश्नपत्र १ - सामान्य स्तर : भाषाशास्त्र के सिध्दांत और हिंदी भाषा का विकासात्मक अध्ययन

(Principles of General Linguistics and Development of Hindi Language.)

-अ

प्रश्नपत्र २ - अनुवाद विज्ञान: सिद्धान्त और प्रयोग

(Translession : Theory & Practice)

प्रश्नपत्र ३ - हिंदी भाषा की व्याकरणिक संरचना

(Grammatical structure of Hindi)

प्रश्नपत्र ४ - वैकल्पिक (OPTIONAL)

अ) कोशविज्ञान और हिंदी

(Lexicology and Hindi)

अथवा

बोली विज्ञान और हिंदी की बोलियाँ (खडी बोली,उर्दु तथा दक्खिनी हिंदीके अध्ययन सहित)

(Dialectology and Hindi dialect with study of Khari Boli,Urdu and Dakhini Hindi)

अथवा

इ) साहित्येतिहास लेखन के सिद्धांत

(Principles of History of Literature.)

एम•ए•द्वितीय वर्ष

प्रश्नपत्र ५ - सामान्य स्तर : भाषा का व्यतिरेकी विश्लेषण तथा द्वितीय भाषा के रुप में हिंदी का (हिंदी और मराठी के संदर्भ में) अध्यापन

(Contrastic Analysis of Language and teaching of Hindi as a second language(with special reference to Hindi and Marathi)

प्रश्नपत्र ६ - हिंदी भाषा का प्रयोजनमूलक अध्ययन और कार्यालयी हिंदी

(Functional Aspect of Hindi Language and Official Hindi)

प्रश्नपत्र ७ - पत्रकारिता का स्वरुप और हिंदी पत्रकारिता

(Introduction to Journalism and History of Hindi Journalism)

प्रश्नपत्र ८ - वैकल्पिक : (OPTIONAL)

अथवा

क) लिपि-विज्ञान और नागरी लिपि(Scriptology and Nagri Script)

अथवा

ख) पाठालोचन के सिध्दांत(Textual Criticism).

अथवा

ग) शैली विज्ञान (Stylistics)

...४

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) पाठ्यक्रम सत्रविरहित ८५ पैटर्न

(M.A. Functional Hindi-Non Semester : 85 Pattern)

प्रश्नपत्र – १ : सामान्य स्तर

भाषाशास्त्र के सिध्दांत और हिंदी भाषा का विकासात्मक अध्ययन ।

उद्देश्य

१. भाषाविज्ञान के विविध अंगों तथा उसकी विभिन्न शाखाओं का परिचय कराना ।
२. भाषा-अध्ययन की विभिन्न विधियों से छात्रों को परिचित कराना ।
३. हिंदी भाषा के विकास के विभिन्न सोपानों से छात्रों को परिचित कराना ।
४. हिंदी भाषा की वर्तमान संवैधानिक स्थिति और हिंदीतर क्षेत्रों में भाषा-प्रसार की स्थितियों से अवगत कराना ।
५. हिंदी भाषा की राष्ट्रीय समन्वयात्मकता का परिचय देना ।

प्रथमखंड

१. भाषा-विज्ञान और उसके विषय

(क) भाषा अध्ययन की विधियाँ – प्रकाशिक (वर्णनात्मक, संरचनात्मक) ऐतिहासिक, तुलनात्मक, काल क्रमिक, एक कालिक, अनुप्रयुक्त (अप्लाइड)

(ख) भाषाविज्ञान के अंग – ध्वनिविज्ञान (स्वन विज्ञान और स्वनिम विज्ञान) पदविज्ञान (रूपविज्ञान) वाक्यविज्ञान, अर्थ विज्ञान, कोश विज्ञान, बोली विज्ञान, भाषा-भूगोल ।

२. ध्वनि विज्ञान (स्वन-विज्ञान)

ध्वनि विज्ञान की परिभाषा, उपयोगिता, शाखाएँ, ध्वनि विज्ञान के अध्ययन की समस्याएँ, वाग् अवयव और उनका कार्य, ध्वनि वर्गीकरण के आधार, स्वर-वर्गीकरण, संयुक्त स्वर, मात्रस्वर, गौणस्वर, श्रुति स्थान तथा प्रयत्न, व्यंजन-वर्गीकरण, व्यंजन गुच्छ, ध्वनिगुण, ध्वनि परिवर्तन के कारण और दिशाएँ ।

३. ध्वनिग्राम-विज्ञान (स्वनिम विज्ञान)

ध्वनिग्राम-विज्ञान का परिचय, ध्वनिग्राम का स्वरूप-विश्लेषण, ध्वनिग्राम-निर्धारण की पध्दति, वितरण, ध्वनिग्राम के भेद, ध्वनिग्रामीय (स्वनिमिक) विश्लेषण ।

४. पद विज्ञान (रूप-विज्ञान)

परिचय, रूपिम के प्रकार, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी ; रूपिम के कार्य, रूप-स्वनिम विज्ञान

५. वाक्य विज्ञान

वाक्य का स्वरूप, वाक्यों के भेद, आकृति, रचना, क्रिया तथा अर्थ के आधार पर वाक्य विन्यास तथा विश्लेषण ।

६. अर्थ-विज्ञान

अर्थ विज्ञान की परिभाषा : शब्द और उसका अर्थ - अर्थ की प्रवृत्ति, अर्थ प्रसारण में बाह्य और आन्तरिक तत्व ।

द्वितीय सत्र

१. हिंदी भाषा की विकासात्मक स्थितियाँ - हिंदी-पूर्व भारतीय आर्यभाषाएँ संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश ।

२. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण, क्षेत्र और हिंदी का उनके बीच स्थान ।

३. हिंदी शब्द का प्रचलन और अर्थग्रहण ।

४. हिंदी भाषा का क्षेत्र-परिचय ।

५. राष्ट्रीय विकास में हिंदी की भूमिका ।

अ) स्वातंत्र्य आंदोलन और सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जागरण के प्रभावी माध्यम के रूप में ।

आ) देश के विभिन्न भाषाई प्रदेशों में राष्ट्रीय समन्वय और सामाजिक एकता के माध्यम के रूप में ।

ई). भारतीय संविधान की २५१ वीं धारा में निर्दिष्ट भारत की सामाजिक संस्कृति की अभिव्यक्ति के रूप में।

६. हिंदीतर क्षेत्रों में हिंदी भाषा का विकास और उसकी समस्याएँ।

संदर्भ ग्रंथ

१) डॉ. देवीशंकर व्दिवेदी : भाषा और भाषिकी
२) प्रो. देवेन्द्रनाथ शर्मा : भाषाविज्ञान की भूमिका
३) डॉ. उदयनारायण तिवारी : भाषाशास्त्र की रूपरेखा
४) डॉ. विश्वनाथ प्रसाद (अनु.) : भाषा (ब्लूमफील्ड कृत लेंग्वेज)
५) डा. कृपाशंकर सिंह, डॉ. चतुर्भुज सहाय : आधुनिक भाषा विज्ञान
६) डॉ. रामविलास शर्मा : भाषा और समाज
७) प्रो. देवेन्द्रनाथ शर्मा : राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान
८) डॉ. भोलानाथ तिवारी : हिंदी भाषा
९) डॉ. क्षेमचंद्र " सुमन " : राष्ट्रभाषा । हिंदी
१०) डॉ. अंबाप्रसाद" सुमन" हिंदी भाषा अतीत और वर्तमान
११) डॉ. उदयनारायण दुबे : राजभाषा के संदर्भ में हिंदी आंदोलनों का इतिहास
१२) डॉ. पी. के. केशवन नायर : दक्षिण भारत के हिंदी प्रचार आंदोलन का तथा भगवानदास तिवारी समीक्षात्मक इतिहास
१३) संपा डॉ. ग. वि. जोगलेकर : राष्ट्रभाषा विचार संग्रह
१४) डॉ. उदयनारायण तिवारी : हिंदी भाषा का उद्गम और विकास
१५) डॉ. हरदेव बाहरी : हिंदी : उद्भव, विकास और रूप
१६) Block & Trager :Outline of Linguistic Analysis.
१७) Gleason H.: Introduction to Descriptive Linguistics.
१८) Hocket F.F. : A Course in Modern Linguistics.

प्रश्नपत्र २ : विशेष स्तर

(आ) अनुवाद विज्ञान सिध्दांत और प्रयोग

उद्देश्य

१ छात्रों को अनुवाद की आधुनिक उपयोगिता से परिचित कराना तथा अनुवादक होने की अर्हता प्राप्त कराना ।

२. स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की व्यावहारिकता का ज्ञान कराना ।

३. अनुवाद प्रक्रिया का सैध्दांतिक परिचय कराना ।

४. अनुवाद की सीमा और समस्याओं से छात्रों को परिचित कराना ।

५. अनुवाद कौशल में अनुवादक की क्षमताओं और अपेक्षित योग्यता से परिचित कराना ।

६. अनुवाद कार्य का परस्पर मराठी अंग्रेजी तथा हिंदी में अभ्यास कराना ।

७. अनुवाद के गुणदोषों की जानकारी देना ।

प्रथम सत्र

१. अनुवाद परिभाषा, प्रकृति, स्वरूप, आवश्यकता और महत्व अनुवाद में भाषा का स्थान, महत्व और शक्ति ।

२. अनुवाद कला तथा विज्ञान (मत-मतान्तरों का विवेचन) तथा अनुवाद की अन्य ज्ञान शाखाओं में भूमिका ।

भाषा विज्ञान, कोश विज्ञान, भाषा दर्शन, व्युत्पत्ति शास्त्र का महत्व

३. अनुवाद और लिप्यांतरण ।

४. अनुवाद के प्रकार — शब्दानुवाद, भावानुवाद, साहित्यिक, शास्त्रीय सामान्य, कार्यालयी, व्यावसायिक - (क) वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्रों में अनुवाद का महत्व तद्-विषयक सामग्री, अनुवाद कार्य में कठिनाई, सतर्कता - अभ्यास । (ख) बैंक तथा अन्य कार्यालयों में हिंदी अनुवाद की आवश्यकता, सामग्री का स्वरूप, अनुवाद की विशेषताएँ - अभ्यास । (ग) सूचना एवं प्रसारण के क्षेत्र में अनुवाद-प्रसारण कार्यों में अनुवाद प्रसारण कार्य में अनुवाद सामग्री, विज्ञापन, पत्रकारिता, भाषण, रेडियो-दूरदर्शन के आलेख ।

५. अनुवाद और भाषा - मूलभाषा के पाठ का बोधन, भाषिक संरचना-व्याख्या, लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त और पुनर्-सर्जन प्रक्रियागत विशेषताएँ- अर्थ योग, अर्थहानि, अर्थान्तरण, अधिकानुवाद, न्यूनानुवाद, कहावतों और मुहावरों का अनुवाद।

६. अनुवाद में भाषा कौशल का महत्व, अनुवाद को शब्द-शक्ति, कल्पना एवं शैली विचार।

द्वितीय सत्र

१. अनुवाद का परीक्षण एवं मूल्यांकन। मूलबध्द और मूलमुक्त अनुवाद, अनुवाद की प्रतिबध्दता अथवा स्वतंत्रता।

२. मराठी से हिंदी में अनुवाद का स्वरूप, विशिष्टताएँ एवं समस्याएँ। अनूदित सामग्री का संप्रेक्षण, संरचना। कोशीय एवं सामाजिक भाव, शब्द का सांस्कृतिक परिवेश - अभ्यास। मराठी और हिंदी का भाषिक स्वरूप एवं प्रकृति।

३. हिंदी से मराठी में अनुवाद का स्वरूप - आवश्यकता अनूदित पाठ की प्रकृति संप्रेक्षण। साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ - समस्याएँ और समाधान। अभ्यास एवं परीक्षण, कल्पना का योग।

४. अनुवाद : दुभाषिया की शैली - परिवेश, विचारधारा। लिखित एवं मौखिक अनुवाद - भाषण, संदेश, प्रतिज्ञापन, उपाधिपत्र आदि का अनुवाद। अनुवादक की योग्यता, कर्तव्य एवं आचार संहिता।

५. विषयबध्द अनुवाद एवं शब्दगठन की समस्या, अर्थ-परिवर्तन की संभावना, विविध प्रकार की सामग्री एवं मूल्यांकन अभ्यास।

६. अनुवाद कार्य में सहायक साधनों का उपयोग - सावधानी एवं अभ्यास - द्विभाषिक, त्रिभाषिक कोश, वर्णनात्मक कोश, सूचियाँ, विषय विशेष के ग्रंथ संदर्भ - उपकरण।

७. अनुवाद की तकनीकें - सपूलता, शाब्दिकता अनुवाद की कसौटी - सीमाएँ और संभावनाएँ।

८. अनुवाद - प्रयोग पक्ष

क) मराठी से हिंदी

ख) हिंदी से मराठी

ग) मराठी, हिंदी और अंग्रेजी का पारस्परिक।

...९

संदर्भ ग्रंथ

१.	डॉ. भोलानाथ तिवारी	: अनुवाद विज्ञान
२.	डॉ. आनंदप्रकाश खेमाणी	: अनुवाद कला कुछविचार
३.	डॉ. एस. वर्मा	: अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार
४.	वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक मंत्रालय	: अनुवाद: कला और समस्याएँ
५.	डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा अन्य (सं.):	: कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएँ
६.	डॉ. मा. गो. चतुर्वेदी तथा कृष्णाकुमार गोस्वामी	: अनुवाद विविध आयाम
७.	डॉ. सुरेशकुमार	: अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा
८.	डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा महेंद्र चतुर्वेदी	: काव्यानुवाद की समस्याएँ
9.	Nida E.A. Charles R.Taber	The Theory and practice of Translation.
10.	Nida E.A.	Towards a Science of Translation.
11.	Catford J.C.	A Linguistic Theory of Translation
12.	Brislin, Richard W	Translation Application & Research

प्रश्नपत्र ३ त्रिभाषास्तर

हिंदी भाषा की व्याकरणिक संरचना

उद्देश :-

१) हिंदी भाषाकी संरचनात्मक व्यवस्था से परिचित कराना ।
२) हिंदी भाषा के व्यावहारिक कौशल की क्षमता उत्पन्न कराना ।
३) हिंदी भाषा के शब्द विन्यास से परिचय कराना ।
४) हिंदी की मानकवर्तनी और उच्चारण प्रणाली का बोध कराना ।

....१०

प्रथम पत्र

१• व्याकरण का स्वरूप, महत्व और कार्य

२• हिंदी का वर्ण-विचार तथा उच्चारण प्रणाली, लिपि और उच्चारण का संबंध

३• लिपि और वर्तनी का संबंध, हिंदी की परिवर्तित होती वर्तनी, मानक वर्तनी का कैसा स्वरूप और उसके संबंध में पक्ष-विपक्ष में विचार, केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा प्रकाशन संस्थानों द्वारा मान्य हिंदी वर्तनी

४• उत्पत्ति, अर्थ, प्रयोग, तथा रूपांतर के आधार पर हिंदी शब्दों का वर्गीकरण

५• हिंदी के शब्दभेद (पार्ट्स ऑफ स्पीच) : वर्गीकरण उपभेद, शब्दभेदों की मान्य परिभाषाओं एवं स्वरूप पर पुनर्विचार ।

६• हिंदी व्याकरण-लेखन का इतिहास

७• हिंदी भाषा की संरचना पर अंग्रेजी भाषाशैली का प्रभाव ।

द्वितीय पत्र

१• लिंग, वचन, कारक विचार

२• कालविचार तथा वृत्तिविचार परिनिष्ठित हिंदी के कालविभाजन तथा वृत्तियों पर हुए अबतक के विचार का पुनरावलोकन ।

३• हिंदी शब्द निर्माण में उपसर्ग, प्रत्यय (कृत तथा तद्धित) और समास का देन, प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली में उक्त बात का अनुप्रयोग

४• वाक्य विचार: पद, पदबंध, उपवाक्य, पदक्रम, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य और प्रयोग, वाक्य विभाजन । वाक्य भेद

५• विपरिवर्तक Transformational तथा निष्पादक Generative व्याकरण की जानकारी

संदर्भ ग्रंथ

१• पं• कामताप्रसाद गुरु : हिंदी व्याकरण
२• पं• किशोरीदास वाजपेयी: हिंदी शब्दानुशासन
३• केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली: बेसिक ग्रामर ऑफ मॉडर्न हिंदी

४· डॉ·चतुर्भुज सहाय : हिंदी के अव्यय वाक्यांश
५· डॉ·यमुना काचरु : हिंदी रूपान्तरात्मक व्याकरण के कुछ प्रकरण
६· डॉ·मुरारीलाल उप्रेति : हिंदी में प्रत्यय विचार
७· डॉ·हरदेव बाहरी : हिंदी का व्यावहारिक व्याकरण
८· डॉ·लक्ष्मीनारायण शर्मा : हिंदी संरचना का अध्ययन अध्यापन
९· डॉ·बालगोविंद मिश्र : व्यावहारिक हिंदी संरचना और अभ्यास
१०· डॉ·पुष्पा कालरा : हिंदी वाक्य विन्यास
११· डॉ·रामचंद्र वर्मा : अच्छी हिंदी

<u>प्रश्नपत्र ४ -- विशेषस्तर : वैकल्पिक</u>

अ) कोशविज्ञान और हिंदी

१· <u>उद्देश</u>

१· कोश की संकल्पना से छात्रों को परिचित कराना ।
२· कोश की व्यावहारिक और उसके प्रयोग की जानकारी देना
३· कोश-निर्माण की विधियों से छात्रों को परिचित कराना
४· विभाषीय और एकभाषीय तथा इतर शब्दकोशों के स्वरूप के संबंध में जानकारी देना ।
५· हिंदी कोश साहित्य के इतिहास से परिचित कराना

<u>प्रथम सत्र</u>

<u>२· पाठ्यक्रम</u>

१· शब्दार्थ विज्ञान तथा कोश विज्ञान
२· कोश परिभाषा स्वरूप और प्रकार,समभाषी,द्विभाषी तथा बहुभाषी कोश-निर्माण की समस्याएँ
३· कोश-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अर्थ-विज्ञान एवं व्युत्पत्तिशास्त्र के सामान्य सिद्धांतों का परिचय
४· कोशभेद-एकभाषी,द्विभाषी,त्रिभाषी,बहुभाषी,विश्वकोश,ज्ञानकोश, साहित्यकोश,मानविकी-कोश,पर्याय कोश,विषयानुसारी कोश,जीवनी या चरित्र कोश, व्युत्पत्ति कोश,पारिभाषिक शब्द कोश,मुहावरा-लोकोक्ति कोश,संस्कृति कोश,संकेत कोश आदि ।

द्वितीय पत्र

१. शब्दकोश का आयोजन-शब्द सूचियाँ, शब्द प्रयोग तथा अर्थ ग्रहण और अर्थविकास

२. हिंदी में पर्याय, विपर्याय, समध्वनिक और समोच्चारी शब्द
   क) शब्द संरचना का अध्ययन
   ख) अर्थ संबंधी समस्याएँ
   ग) उद्देश, प्रयोक्ता और प्रविधि के आधार पर कोश निर्माण के सिद्धांतों का विवेचन
   घ) शब्द निर्माण, शब्द रचना, शब्द विन्यास और अर्थग्रहण की समस्याएँ
   ङ) शब्दों के प्रायोगिक संदर्भ या उदाहरण

३. शब्दकोश निर्माण में व्युत्पत्ति व्याकरण, उच्चारण, संकेत चिह्न और संक्षिप्तीकरण

४. कोश में वर्ण्य शब्द, मुहावरा तथा लोकोक्ति क्रम का व्यवस्थापन

५. हिंदी कोशसाहित्य का इतिहास : सामान्य परिचय

संदर्भ ग्रंथ

१)	डॉ. रामचंद्र वर्मा	: कोशकला
२)	डॉ. ना. ल. कालभोर	: हिंदी कोश साहित्य
३)	डॉ. हरदेव बाहरी	: हिंदी में कोश कार्य, "भाषा" पत्रिका (विश्वहिंदी संम्मेलन विशेषांक)
४)	डॉ. सुरेश्वर	: हिंदी कोश विज्ञान का उद्भव और विकास
५)	डॉ. विद्यानिवास मिश्र	: हिंदी शब्द संपदा
६)	अनु. डॉ. सरोजनी वर्मा	: कोशविज्ञान
७)	अचलानंद जखमोला	: हिंदी कोश साहित्य, एक विवेचनात्मक और तुलनात्मक अध्ययन
८)	डॉ. भोलानाथ तिवारी	: कोश विज्ञान
9)	Dr. S.M. Katre	Lexicography
10)	Dr. Ladislav Zgusta	Manual of Lexicography.
11)	C.I.I.L. Mysore	Proceedings of First Conference on Dictionary Making.
12)	Fred. W.Householder & Sol. Saporta(Ed.)	Problems in Lexicography

प्रश्न पत्र :४ विशेष स्तर : वैकल्पिक

आ) बोली विज्ञान और हिंदी बोलियां (खड़ी बोली, उर्दू तथा दक्खिनी हिंदी के अध्ययन सहित)

उद्देश्य

१. बोली की भाषा वैज्ञानिक उपयोगिता से परिचित कराना।
२. विभिन्न बोलियों के क्षेत्रों तथा उनकी विशेषताओं से छात्रों का परिचय कराना।
३. हिंदी भाषा के विकास में बोलियों की भूमिका से अवगत कराना।
४. बोलियों के तुलनात्मक अध्ययन की भूमि तैयार करना।
५. हिंदी के खड़ी बोली तथा दक्खिनी हिंदी रूप से विशेष परिचय कराना

प्रथम पत्र

१. भाषा तथा बोली - बोलियों का मिलन स्थल, बोलियों का सीमांकन, शुद्ध बोली, व्यक्तिबोली, उपबोली, विभाषा, भाषा।
२. बोली विज्ञान तथा भाषा भूगोल- भाषा अध्ययन, महत्व, स्वरूप, विधि, बोली मानचित्रावली तथा समभाषाएँ रीतिरेखा।
३. हिंदी की बोलियों का उद्भव तथा विकास।
४. पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी का तुलनात्मक अध्ययन।
५. निम्नलिखित बोलियों का विशेष परिचय :
कौरवी (खड़ीबोली), ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी
(उच्चारण तथा व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से)
६. हिंदी की शेष बोलियों का सामान्य परिचय।
७. ब्रज, अवधी, भोजपुरी और राजस्थानी के साहित्य की सामान्य जानकारी

द्वितीय पत्र

१. खड़ीबोली, उर्दू और दक्खिनी हिंदी का उद्भव और विकास।
२. उक्त भाषारूपों के प्रदेश का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिचय।
३. तीनों भाषारूपों के पारस्परिक प्रभाव का आदान-प्रदान का अध्ययन।
४. तीनों भाषारूपों की व्याकरणिक संरचना का सामान्य और तुलनात्मक परिचय
५. तीनों भाषारूपों के साहित्य के विकास की संक्षिप्त जानकारी
(केवल काल विभाजन, विविध विधाओं का आरंभ, उनके प्रमुख रचनाकार और उनकी कृतियाँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ)

संदर्भ ग्रंथ

१.	डॉ.कैलाशचंद्र भाटिया	भाषा भूगोल
२.	डॉ.हीरालाल शुक्ल	शब्द भूगोल सिध्दांत और प्रयोग
३.	डॉ.अम्बाप्रसाद "सुमन"	हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप
४.	डॉ.धीरेंद्र वर्मा	ब्रजभाषा
५.	डॉ.बाबूराम सक्सेना	अवधी का विकास
६.	डॉ.शंकर शेष	छत्तीस गढ़ी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
७.	डॉ.गेंदालाल शर्मा	ब्रजभाषा और खाडीबोली के व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन
८.	डॉ.ताराचंद	हिंदीपर फारसी का प्रभाव
९.	डॉ.श्रीराम शर्मा	दक्खिनी हिंदी का उद्भव और विकास
१०.	डॉ.ललित मोहन अवस्थी	खाडीबोली हिंदी का सामाजिक इतिहास
११.	डॉ.भालचंद्रराव तेलंग	हिंदु बनाम दक्खिनी
१२.	डॉ.हरिशंकर शर्मा	उर्दु साहित्य का परिचय
१३.	डॉ.सरला शुक्ल	उर्दु साहित्य का इतिहास
१४.	डॉ.आशाक केलकर	स्टडीज इन हिंदी उर्दु
१५.	डॉ.उदयनारायण तिवारी	भोजपुरी भाषा और साहित्य
१६.	डॉ.ओंकारचंद्र शर्मा	खाडीबोली स्वरूप और साहित्य की परंपरा
१७.	डॉ.बरदेव बाहरी	हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ
१८.	डॉ.कैलाशनाथ शुक्ल	पश्चिमी हिंदी बोलियों की व्याकरणिक
१९.	डॉ.परमानंद पांचाल	दक्खिनी हिंदी विकास और इतिहास
२०.	डॉ.परमानंद पांचाल	दक्खिनी हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली

प्रश्न पत्र : ४ विशेषज्ञ वैकल्पिक

(इ) साहित्येतिहास लेखन के सिध्दान्त

उद्देश्य १) छात्रोंको साहित्यके इतिहास लेखन की आवश्यकतासे परिचित कराना।
२) साहित्य तथा समाज की संकल्पना तथा उनके परस्पर संबंध परिचित कराना।
३) सामान्य इतिहास तथा साहित्य के इतिहास लेखन की समस्याओंसे परिचित कराना।
४) साहित्य के इतिहास लेखन की विविध विधिओंका परिचय देना।
५) इतिहास भेदों से परिचित कराना।

...१५

प्रथम सत्र

१. इतिहास और साहित्येतिहास
२. साहित्येतिहास का दृष्टिकोण एवं विकास
३. साहित्येतिहास में युग एवं धाराओं का निर्धारण - काल विभाजन, नामकरण

द्वितीय सत्र

१. साहित्येतिहास कासामग्री संकलन और उसकी समस्याएँ ।
२. हिंदी साहित्य के स्रोत और उनसे संबंधित समस्याएँ (पाठानुसंधान तथा ऐतिहासिक भाषाविज्ञान काउपयोग)
३. हिंदी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा एवं प्रयोग भिन्नता ।

संदर्भ ग्रंथ

१.	डॉ. सुमन राजे	साहित्येतिहास : संकल्पना और स्वरूप
२.	डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त	हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
३.	डॉ. नलिन विलोचन शर्मा	साहित्य का इतिहास दर्शन
४.	डॉ. किशोरीलाल गुप्त	हिंदी साहित्य के इतिहासों का इतिहास
५.	श्यामसुंदर दास	हिंदी भाषा और साहित्य
६.	आ. रामचंद्र शुक्ल	हिंदी साहित्य का इतिहास
७.	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	हिंदी साहित्य की भूमिका
८.	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	हिंदी साहित्य
९.	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	हिंदी साहित्य का आदिकाल
१०.	डॉ. मैनेजर पाण्डेय	साहित्य का इतिहास दर्शन
११.	डॉ. नामवर सिंह	इतिहास और आलोचना
१२.	डॉ. धीरेंद्र वर्मा (सं)	हिंदी साहित्य भाग १, २, व ३
१३.	डॉ. पारीक रूपचंद	हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन

एम. ए. प्रयोजनमूलक हिंदी द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र - ५ : सामान्य स्तर :

भाषा का व्यतिरेकी विश्लेषण तथा द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्यापन (हिंदी और मराठी के संदर्भ में)

उद्देश्य

१. भाषा के व्यतिरेकी अध्ययन की छात्रों को जानकारी देना ।
२. भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी अध्ययन की आवश्यकता से अवगत कराना ।
३. प्रथम भाषा तथा द्वितीय भाषा के अध्ययन बिंदुओं की जानकारी देना ।
४. हिंदी तथा मराठी के व्यतिरेकी विश्लेषण तथा अध्ययन से परिचित कराना और महाराष्ट्रीय छात्रों को हिंदी अध्यापन के लिए आधारभूमि तैयार करना ।
५. हिंदी की लिखित तथा मौखिक अभिव्यक्ति में शुध्दता तथा कुशलता को विकसित करना ।

प्रथम सत्र

१. हिंदी और मराठी की स्वर-व्यंजन व्यवस्था

२. हिंदी और मराठी के स्वनिम : समरूपता तथा भिन्नता, हिंदी के विशिष्ट स्वनिम, अनुनासिकता, संध्यक्षर, संयुक्त-व्यंजन

३. दोनों भाषाओं के रूप स्वनिमिक परिवर्तन - संधियाँ और उनके विविध प्रकार क्रियारूपों तथा अन्य शब्द रूपांतरों में रूप स्वनिमों के कारण होनेवाला ध्वनि परिवर्तन ।

४. रूप विज्ञान- दोनों भाषाओं के वाग्भेद (Parts of Speech)

लिंग विचार, वचन विचार, कारक विचार, विकृतरूप विचार, क्रियापद विचार, आख्यात प्रत्यय, कालभेद, वृत्ति भेद (Moods) तथा सर्वनाम विचार ।

५. वाक्य विन्यास - पदबंध, पदक्रम, वाच्य तथा प्रयोग, बलाघात तथा अनुतान विधायक तुलना

...१७

६. शब्द भंडार - तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी तथा नवनिर्मित पारिभाषिक शब्दावली तथा समरूप किन्तु भिन्नार्थी शब्दों की अर्थ प्रक्रिया का तुलनात्मक विचार ।

७. लेखिम विज्ञान - समानता और भेद - ध्वनियों में साम्य भेद ।

८. उच्चारण - मानक हिंदी की उच्चारण प्रणाली, शब्दोच्चारण में आरोह अवरोह, बलाघात, अनुनासिक- अर्ध अनुनासिक आदि के उच्चारण का महत्व, हिंदी मराठी उच्चारण में समानता और भेद ।

द्वितीय अंक

१. भाषा - १ (मातृभाषा) तथा भाषा - २ (अन्य भाषा) के अध्यापन में होनेवाला अंतर, बहुभाषिकता की समस्या और हिंदी का अध्यापन ।

२. बालक और प्रौढों के भाषा शिक्षण में होनेवाला अंतर ।

३. भाषा के अन्यान्य रूपों से परिचय :- मानक भाषा बोली-भाषा, प्रयोग-प्रणाली (रजिस्टर)

४. हिंदी के अध्यापन में प्रायोगिक भाषा विज्ञान की उपादेयता ।

५. हिंदी : आकलन, भाषण, पठन, लेखन की योग्यता प्राप्त करने के लिए अध्यापन की विविध पध्दतियों पर विचार (अ) व्याकरण अनुवाद प्रणाली (ब). प्रत्यक्ष प्रणाली (स) संरचनात्मक प्रणाली

६. अध्यापन साधनों और साधन (अ) औपचारिक-कक्षा में प्राप्त साधनों ग्रंथालय में प्राप्त साधनों, नक्शे, चार्ट्स, चित्र, भाषा प्रयोगशाला । (आ) अनौपचारिक आकाशवाणी, सिनेमा, दूरदर्शन ।

७. भाषिक मूलों का विश्लेषण तथा भाषा - १ और भाषा - २ का व्यतिरेकी विश्लेषण ।

८. वार्तालाप और जनसंपर्क - वार्तालाप के भिन्न संदर्भ (संभाषण, प्रश्नोत्तर, वादविवाद, साक्षात्कार), स्थान, प्रयोजन और साधन की भिन्नता और भाषा-व्यवहार, वार्तालाप की शैलियाँ और शिष्टाचार प्रणाली (घर, परिवार, अतिथि सत्कार, पर्व, त्यौहार, संस्कार, डाक, तार, रेल, बैंक , यातायात तथा जनसंपर्क के साधनों / टी.व्ही., चित्रपट / रेडिओ) में प्रयुक्त हिंदी वार्तालाप प्रणाली तथा उसकी शैलियाँ ।

...१८

९. भाषण और वाचन - भाषण तथा आत्मकथन के विभिन्न संदर्भ और उनकी शैलियाँ, भाषा के प्रमुख तत्व मौन और मुखर वाचन, गद्य काव्य तथा नाटक-वाचन का अंतर और उसकी आवश्यकता ।

प्रश्नपत्र पत्र - ६ : विशेषास्त्र

हिंदी भाषा का प्रयोजन मूलक अध्ययन और कार्यालयी हिंदी

उद्देश्य

१. हिंदी के वाक्य सांचों की जानकारी देना ।
२. विविध कार्यालयों तथा व्यवसायों में कार्यरत अथवा नौकरी पाने के इच्छुक व्यक्तियों को हिंदी के कार्यालयीन स्वरूप का ज्ञान कराना ।
३. मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति की व्यावहारिकता का परिचय तथा अभ्यास कराना ।
४. दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त हिंदी शब्दावली तथा मानक पारिभाषिक शब्दावली का बोध कराना ।
५. कार्यालयी आवश्यकता हेतु शब्द चयन की क्षमता विकसित कराना ।

प्रथम खंड

१. भाषा के विविध रूप - (क) बोली, (ख) उपभाषा, (ग) मातृभाषा, (घ) द्वितीय भाषा, (च) परिनिष्ठित भाषा, (छ) राष्ट्रभाषा, (ज) राजभाषा (राजभाषा विधायक संस्कारों नीति और हिंदी की स्वीकृति, राजभाषा अधिनियम १९६३ तथा १९६७) । (झ) राज्यभाषा
२. हिंदी भाषा की प्रयुक्तियाँ (रजिस्टर) साहित्यिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी, बोल चाल संबंधी ।
३. हिंदी की प्रयोजनमूलक शैलियाँ - संवाद शैली, पत्रलेखनशैली, भाषणात्मक शैली, विचारात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली ।
४. हिंदी भाषा प्रयोग के अन्यान्य क्षेत्रों - पत्रकारिता, बाल साहित्य प्रौढ-साहित्य, विज्ञापन, व्यापार और वाणिज्य, विज्ञान और टेक्नॉलॉजी में हिंदी के व्यवहार की आवश्यकता, स्थिति और समस्याएँ ।

...१९

५. तकनीकी शब्दावली - तकनीकी शब्दावली का निर्माण और उनमें अपनाए गए सिद्धान्त, शब्दावली निर्माण में संस्कृत तथा इतर भाषाओं एवं अंग्रेजी का योग, इस दिशा में विद्वानों, स्वैच्छिक संस्थाओं और भारत सरकार द्वारा किए गए प्रयत्न, अखिल भारतीय मानक तकनीकी शब्दावली के निर्माण की समस्या और उसका समाधान।

६. सामान्यव्यवहार, कार्यालयीन व्यवहार, साहित्य और शिक्षा में प्रयुक्त शब्दावली का पारस्परिक अन्तर।

७. अन्यान्य कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग और उसकी सामग्री - आयकर, बिक्रीकर जीवनबीमा, सीमाशुल्क, रेल, बस, यातायात, दूरसंचार, केंद्रीय उत्पादन शुल्क, बैंक, सेना, आदि में हिंदी का प्रयोग, स्वरूप और महत्व, सामग्री तथा शब्दावली।

द्वितीय पत्र

१. सरकारी पत्राचार : प्रयोग, प्रकार, स्वरूप।

२. मसौदा लेखन : सामान्य सिद्धान्त।

३. मसौदा लेखन अभ्यास- आवेदन पत्र, प्रतिवेदन, अनुदेश, पावती, अंतरिम उत्तर, स्मरणपत्र, दौरा कार्यक्रम (सरकारी) पत्र अर्ध सरकारी पत्र, ज्ञापन, कार्यालयीन ज्ञापन, आदेश, कार्यालय आदेश, (मंजूरी, स्वीकृती) अनुशासनिक मामले परिपत्र (सर्कुलर), तार, द्रुतपत्र, संदेश, शुभकामनाएँ, स्वीकृतीपत्र, कार्यालयीन समारोह के लिए निमंत्रण पत्र आदि।

४. टिप्पणी लेखन : सामान्य सिद्धांत और प्रकार

५. टिप्पणी लेखन अभ्यास: सहायक स्तर की टिप्पणियाँ, अनुशासनिक कार्यवाही अनुशासनिक (अंतर्विभागीय) टिप्पणी।

६. बैठकों (समितियों का आयोजन) -कार्यसूची, कार्यवाही, कार्यवृत्त।

७. कार्यालयी वाक्य-खंड : स्थिति एवं प्रयोगगत विशेषताएँ।

८. सारलेखन : सिद्धान्त, प्रकार, क्रमिक सार, सारलेखन, अभ्यास (पत्राचार, टिप्पणियों तथा नियमों-विनियमोंके आधार पर)

२०

संदर्भ ग्रंथ

१. डॉ. रामविलास शर्मा : भाषा और समाज
२. डॉ. श्यामजी गोकुल वर्मा : हिंदी भाषा कुशलता
३. डॉ. वेदप्रताप वैदिक : हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम
४. डॉ. गोपाल शर्मा : सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन।
५. प्रो. मालतीबाई दाडेकर : बाल साहित्याची रूपरेखा।
६. डॉ. परमानंद गुप्त : अभिनव पत्र व्यवहार
७. डॉ. रवि अग्रवाल और प्रभाकर गुप्त : व्यावसायिक हिंदी
८. डॉ. शिवनारायण चतुर्वेदी : आवेदन प्रारूप
९. डॉ. रवींद्र श्रीवास्तव : प्रयोजनमूलक हिंदी
१०. डॉ. बी. रा. जगन्नाथन : हिंदी प्रयोग और प्रयोग
११. डॉ. गोपीनाथ श्रीवास्तव : सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग
१२. सं. हरीबाबू कंसल तथा अन्य : कार्यालयी सहायिका
१३. केंद्रीय हिंदी निदेशालय दिल्ली : पारिभाषिक शब्द संग्रह (अंग्रेजी हिंदी)
१४. Dr. G.S.Reddy The Language and Problems in India
१५. गृहमंत्रालय कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग : केंद्रिय सचिवालय कार्यालय पद्धति (वितरक: जोड प्रकाशन एजुकेशन बुकसेंटर साउथ एक्टेंशन, नई दिल्ली।)
१६. विराज : प्रामाणिक आलेखन, टिप्पण।
१७. भारतीय रिज़र्व बैंक केंद्रीय कार्यालय बंबई : टिप्पण और प्रारूप लेखन (कुछ नमुने: इंग्रजी-हिंदी)
१८. राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार प्राज्ञ पाठशाला (कार्यालयी हिंदी)
१९. राजभाषा विभाग : गृह मंत्रालय, भारत सरकार (प्राज्ञ अभ्यास पुस्तिका) प्राज्ञ पाठमाला भाग-२
१८,१९ का प्रतिस्थान: : मुद्रांक बंध, ई-९/२३ वसंत विहार नई दिल्ली-११००५९)
२०. डॉ. गोपीनाथ श्रीवास्तव : अंग्रेजी-हिंदी-प्रशासकीय प्रयोग कोश

प्रश्नपत्र : ८ द्वितीय स्तर

पत्रकारिता का स्वरूप और हिंदी पत्रकारिता

उद्देश्य

१. छात्रों को पत्रकारिता साहित्य लेखन की संकल्पना से परिचित कराना।

२. पत्रकारिता साहित्य की वर्तमान आवश्यकता और महत्त्व की जानकारी देना।

३. समाचार पत्रों के महत्त्व से परिचित कराना।

४. हिंदी पत्रकारिता के स्वरूप और इतिहास से परिचित कराना।

५. पत्रकारिता के विभिन्न पक्षों का ज्ञान तथा अभ्यास कराना।

प्रथमसत्र

१. पत्रकारिता का स्वरूप और उद्देश्य, पत्र-संपादक का कर्तव्य और दायित्व।

२. पत्रकारिता की स्वाधीनता, संवाददाता और उसका कार्य। पत्रकार की आचार संहिता, समाचार पत्र के सत्त्व तथा तथ्य का ज्ञापन।

३. संपादक कला- समाचार संपादन, समाचार लेखन, शीर्ष पंक्तियाँ, संपादकीय पृष्ठ, भेंटवार्ता, स्तंभ लेखन, आलेख, नक्शे, फोटो, चित्र आदि का उपयोग मुद्रित शोधन (प्रूफ रीडिंग)

४. पत्रकारिता के भेद और उनसे संबंधित संपादनकला- (अ) काल की दृष्टि से साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक (आ) विषय की दृष्टि से - ज्ञान और मनोरंजन विषयक, ललित साहित्य विषयक, कला विषयक, क्रीडा विषयक।

द्वितीय पत्र

१. पत्रकारिता का भाषिक पक्ष – विशुद्धता बनाम, प्रयोगधर्मिता, अनुवाद और भाषा, गलत अनुवाद के परिणाम, विशिष्ट विषय भाषा प्रयोग, पत्रकारिता की दृष्टि से भाषा का आदर्श, भाषा की अभिवृद्धि में पत्रकारिता का योगदान।

२. हिंदी पत्रकारिता – हिंदी पत्रकारिता का उद्भव तथा हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में उसका योगदान।

३. हिंदी पत्रकारिता तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक जन जागरण।

४. हिंदी पत्रकारिता – विकास के पद चिह्न।

संदर्भ ग्रंथ

१. डॉ. वेदप्रताप वैदिक : हिंदी पत्रकारिता – विविध आयाम।

२. श्री विष्णुदत्त शुक्ल : पत्रकार-कला

३. डॉ. कमलापति त्रिपाठी और पुरुषोत्तम टण्डन : पत्र और पत्रकार

४. डॉ. रामअवतार शर्मा : हिंदी पत्रकारिता का हिंदी साहित्य को योगदान।

५. श्री लक्ष्मीकांत व्यास : पराड़करजी और पत्रकारिता

६. श्री अ.गो. शेवडे : समाचार पत्र व्यवस्थापन

७. J. Jayne Welrrop : An Introduction to Journalism

८. Mogiffort Robert C. : The Art of Editing The News

९.

प्रश्नपत्र : ८ विशेषस्तर : वैकल्पिक
(क) लिपि विज्ञान और नागरी लिपि

उद्देश्य :

१. भाषा और लिपि की संकल्पना से छात्रों को अवगत कराना।
२. लिपि के महत्व और उसकी उपयोगिता की जानकारी देना।
३. लिपि के विकास की जानकारी देना।
४. नागरी लिपि के भारतीय भाषाओं की लिपि के रूप में स्वीकृति और विकास की संभावनाओं से परिचित कराना।

प्रथम पत्र

१. लिपिविज्ञान का स्वरूप :

लिपि की परिभाषा, लिपि के अनिवार्य तत्व, आधार फलकों की विशेषताएँ, प्रयोग-विधि, लिपि और भाषा का संबंध, लिपि का महत्व, लिपि-विश्लेषण शास्त्र।

२. लिपिविज्ञान का क्षेत्र, लिपि विज्ञान और लेखनकला में अंतर।

३. विश्व में लेख-लिपि का उद्भव और प्रसार :

लेखन का आरंभ, युरोपीय तथा भारतीय दृष्टिकोण, लिपि के तीन सोपान– चित्रलिपि–, भावलिपि, ध्वनिलिपि, ध्वनिचित्रलिपिके भेद।

४. लिपियों का वर्गीकरण : अ) आकृतिमूलक वर्गीकरण–चित्रलिपि, रेखालिपि, आ) अभिव्यक्तिमूलक वर्गीकरण– अर्थबोधक लिपि, उच्चारण बोधक लिपि, मिश्रित अवस्थाएँ (इ) भारतीय लिपिवर्ग (ई) सामी लिपिवर्ग। (उ) युरोपीय लिपिवर्ग (ए) चीनी लिपिवर्ग विकास के चिह्न।

द्वितीय पत्र

५. नागरी लिपि का उद्भव और उपलब्धियाँ

नागरी लिपिका उद्भव, ब्राह्मी से नागरी तक लिपि का विकास, सरलीकरण, उद्भवकालीन नागरी का रूप, संदेश युक्ती, स्वर का मूल रूप, स्वर का रूप, व्यंजन का मूल रूप, स्वर और व्यंजन का संयोजन, अन्य ध्वनि संकेत।

६. नागरी के विकास का अनुसन्धान, शैली काल में आकृति-विकास, नागरी अंक और अक्षर

७. नागरी का यंत्रलिपि के रूप में विकास:

यंत्र और लिपि, नागरी सुधार के प्रयत्न, सुधार का प्रथम चरण, सिमीत प्रयत्न और सुझाव, द्वितीय चरण और सुझाव, तृतीय चरण: समाधान की खोज, सेवाग्राम की नागरी, काका कालेलकर समिती, पराडकर प्रस्ताव, नार सुझाव, आचार्य नरेंद्र देव समिति के सुझाव, केंद्र सरकार के प्रयत्न।

८. परिवर्धित देवनागरीका स्वरूप : राष्ट्रलिपि के रूप में देवनागरी, एक राष्ट्र एक लिपि।

९. वर्तमान नागरी: विस्तार और सीमाएँ, वर्तमान नागरी की वर्तनी, अच्छी लिपि के गुण, निष्पक्ष परीक्षण नागरी का मूल्यांकन, फारसी और रोमन लिपि से तुलना।

१०. नागरी में तार लिपि तथा अन्तरराष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि।

संदर्भ ग्रंथ

१. नागरी लिपि का उद्भव और विकास	: डॉ. ओमप्रकाश भाटिया "अराज"
२. परिवर्धित देवनागरी	: केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली
३. हिंदी भाषा और नागरी लिपि	: लक्ष्मीकांत वर्मा
४. भारतीय प्राचीन लिपिमाला	: डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
५. देवनागरी लिपि का स्वरूप विकास और समस्याएँ	: डॉ. डॉ. न. चिं. जोगळेकर तथा डॉ. भगवानदास तिवारी
६. नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी	: अनन्त चौधरी
७. नागरी लिपि का रूप और सुधार	: मोहन ब्रिज
८. इंडियाज नॅशनल रॉइटिंग	: प्रकाशक सरस्वती सदन

प्रश्नपत्र : ४ विशेषस्तर : वैकल्पिक

(ग) पाठालोचन के सिद्धांत

उद्देश

१. पाठालोचन की संकल्पना से छात्रों को परिचित कराना।
२. शोध आदि के कार्य हेतु पाठ सामग्री संकलन की जानकारी देना।
३. पाठसंपादन हेतु मूलपाठ के विविध पक्षों की जानकारी देना।

प्रथम पत्र

१. पाठालोचन व्याख्या, आवश्यकता, उद्देश्य, सीमा ।

२. भाषा तथा लिपि का ज्ञान, छंद एवं साहित्य-शास्त्र ज्ञान, वस्तु संमत ज्ञान, लेखन सामग्री ज्ञान ।

३. सामग्री-संग्रह, पाठ-चयन, पाठ-सुधार

४. संपादन-सामग्री, मुख्य सामग्री, स्वहस्त-लेख, प्रथम प्रतिलिपि, प्रतिलिपि की प्रतिलिपि, शुद्ध पाठ की प्रतियाँ, भिन्न पाठ की प्रतियाँ, उपलब्ध प्रतियाँ, अनुपलब्ध प्रतियाँ, पारस्परिक संबंध, सहायक सामग्री, संग्रह ग्रंथ टीका ग्रंथ, अनुवाद, परिशिष्ट ग्रंथ, रचयिता के अन्य ग्रंथ, आधार ग्रंथ :

द्वितीय पत्र

१. पाठ-विकृतियाँ - प्रतिलिपि के कारण, भाषा के कारण, लिपिभ्रम के कारण, उच्चारण के कारण, असावधानी के कारण, सचेष्ट परिवर्तन के कारण ।

२. पाठ-चयन : पाठों के मुख्य संबंध, शाखा संबंध, संकीर्ण संबंध, पाठ तथा अर्थ की संगति, : पाठ स्वीकृति के कारण ।

३. पाठ-सुधार : प्रसंग, अर्थ, छन्द व्याकरण, शैली व्यक्तिगत प्रयोग ।

४. पाठ-निर्णय के सिद्धांत ।

संदर्भ ग्रंथ

१. प्रोलोगेमेना टू दि क्रिटिकल एडिशन ऑफ दि आदिपर्व ऑफ महाभारत: डॉ. उदयशंकर

२. इंडियन पेलियोग्राफी - डॉ. राजबली पांडेय

३. भारतीय प्राचीन लिपिमाला- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा

४. पाठ-संपादन के सिद्धांत- डॉ. कन्हैया सिंह

५. भारतीय संपादन-शास्त्र-श्री मूलराज जैन

६. पाठालोचन: सिद्धांत और प्रक्रिया- डॉ. मिथिलेश कांति

७. भारतीय पाठालोचन की भूमिका- डॉ. एस. एम. कात्रे, अनु. डॉ. उदयनारायण तिवारी

८. पाण्डुलिपि विज्ञान- डॉ. सत्येन्द्र

प्रश्नपत्र : ८ विशेषास्तर वैकल्पिक

(ग) शैलीविज्ञान

उद्देश्य

(१) विद्यार्थियों का शैली-विज्ञान की अवधारणा से परिचित कराना ।

(२) शैली विज्ञान की परंपरागत एवं आधुनिक अध्ययन की जानकारी देना ।

(३) भाषा के प्रभुत्व पक्ष की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित कराना ।

प्रथम सत्र

१. शैलीविज्ञान का स्वरूप, परिभाषाएँ, प्रयोजन तथा अध्ययन क्षेत्र ।

२. शैलीविज्ञान का उद्गम और विकास, शैली-विज्ञान या कला, शैली और चयन की समस्या, शैली बनामरीति । शैलीविज्ञान और आलोचना ।

३. शैली के उपकरण - चयन, विचयन, स्थापन, अग्र-प्रस्तुतीकरण, पुनरावर्तन, सादृश्य विधान, समांतरता, प्रतीक विधान, बिंबविधान

४. शैली विज्ञान तथा अन्य विज्ञान - भाषा विज्ञान, मनो विज्ञान, सौंदर्य-शास्त्र, दर्शन, समाजशास्त्र ।

५. साहित्य समीक्षा प्रणालियों में शैली विज्ञान का स्थान । शैली विज्ञान की स्वतंत्रता ।

६. शैली विज्ञान का इतिहास ।

द्वितीय सत्र

१. भारतीय काव्यशास्त्र तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांतों में शैली- विज्ञान के तत्व ।

२. काव्यभाषा तथा काव्येतर भाषा ।

३. गद्य साहित्य और पद्य साहित्य के समीक्षण के लिए शैली विज्ञान का अनुप्रयोग

४. शैलीविज्ञान की अध्ययन प्रक्रिया- उसमें भाषाशास्त्र के अंगों का उपयोग ।

५. ध्वनीय शैली विज्ञान ।

६. विशिष्ट साहित्यकारों की कुछ रचनाओं का शैली वैज्ञानिक अध्ययन- कबीर, बिहारी, प्रेमचंद, जैनेंद्र कुमार, कवि निराला, कवि मुक्तिबोध

संदर्भ ग्रंथ

१. डॉ. गुप्तेश्वरनाथ उपाध्याय — शैली विज्ञान का स्वरूप

२. डॉ. कृष्णकुमार शर्मा — शैली विज्ञान की रूपरेखा

३. डॉ. भोलानाथ तिवारी — शैली विज्ञान

४. डॉ. विद्यानिवास मिश्र — रीति विज्ञान

५. डॉ. भोलानाथ तिवारी — व्यावहारिक शैली विज्ञान
[illegible]

६. डॉ. सुरेशकुमार — प्रेमचंद की भाषा का शैली वैज्ञानिक अध्ययन

७. डॉ. सुरेशकुमार — शैली विज्ञान

८. डॉ. रवीन्द्रकुमार श्रीवास्तव — शैली विज्ञान और आलोचना की नई भूमिका

९. डॉ. कृष्णकुमार शर्मा — शैली विज्ञान का इतिहास

१०. डॉ. कृष्णशंकर सिंह — आधुनिक आलोचना बनाम शैली विज्ञान

११. डॉ. सुरेशकुमार — शैली और शैली विज्ञान

१२. डॉ. शशिभूषण शीतांशु — शैली विज्ञान का इतिहास

0000

३६५-४२१/१९९०/मो/डी.जी.कु.